घूंघट प्रथा से आजादी दिलाती महिला सरपंच

औरत जिसके कई रूप हैं वो एक मां, बहन, पत्नी, बेटी और बहू है। वो सारे रिश्तों को पूरी ईमानदारी के साथ निभाती है। लेकिन समाज में आज भी महिलाओं को पुरूषों के बराबर अधिकार नहीं हैं। ऐसे में ऊपर से पर्दा प्रथा, बाल विवाह जैसी कई समस्याएं भी उनकी साथ जुड़ी हैं। हरियाणा में भी राज्य सरकार ऐसी कई समस्याएं को जड़ से दूर करने के प्रयास कर रही हैं। लेकिन कुछ प्रगतिशील विचारों वाली महिलाओं ने इसके खिलाफ आवाज उठानी शुरू की है और उन्हीं महिलाओं में से एक हैं फरीदाबाद की नजमा खान, जो धौज गांव की सरपंच भी हैं।

मोनिका गौतम

कल तक मेरी पहचान सिर्फ घूंघट तक सिमटी थी, लेकिन आज मैं खुद अपनी पहचान हूं। यह आत्मसम्मान हरियाणा की महिलाओं में लाने का प्रयास कर रही हैं फरीदाबाद जिले के धौज गांव की सरपंच नजमा खान। घूंघट प्रथा के खिलाफ यह मुहिम नजमा गांव की दूसरी महिलाओं की मदद से चला रही हैं। आज नजमा खान की तरह गांव की ओर भी कई महिलाएं हैं जो ना सिर्फ बिना घूंघट कहीं भी आ जा रही हैं, बल्कि जरूरत पड़ने पर घूंघट का समर्थन करने वालों के नजरिये को बदलने का काम भी कर रही हैं।

घूंघट हटाने का फैसला

दिल्ली की रहने वाली नजमा की शादी फरीदाबाद के धौज गांव में हुई थी, क्योंकि यही उनका ससुराल है अतः शादी के बाद वह यहीं रहने लगी और धौज गांव की सरपंच भी बन गयी। सरपंच होने के साथ-साथ उन्होंने इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन भी की। ससुराल में उन्होने सब औरतों को घूंघट करते हुए देखा। जिनको देखते हुए उन्होने भी घूंघट करना शुरू कर दिया। इस दौरान उनको कई तरह की परेशानियां होती थी। इसलिये उन्होने साल 2008 में अपने चेहरे से घूंघट हटाने का फैसला किया। नजमा के अनुसार शर्म आंखों में होती है, घूंघट में नहीं। आज भी काफी सारी औरतें अपने बड़ों के आगे घूंघट करती हैं और उनके साथ लड़ाई झगड़ा भी करती हैं, ऐसे में उस घूंघट या लिहाज का क्या मतलब।

'घूंघट हटाओ' मुहिम

सरपंच बनी नजमा खान ने जब घूंघट हटाने का फैसला लिया तो उन्होने तय किया कि वो दूसरी महिलाओं को भी इससे आजादी दिलाएंगी। इसके लिये उन्होने 'घूंघट हटाओ' मुहिम के साथ जुड़ने का फैसला किया। इस मुहीम में हरियाणा के विभिन्न जिलों की कई दूसरी महिलाएं भी जुड़ी हुई हैं। इस मुहिम के साथ अंजू और मंजू नाम की दो महिलाएं भी शामिल हैं जिन्होने पहले खुद अपना घूंघट हटाया और उसके बाद अपने गांव और दूसरे गांवों की महिलाओं को भी इस प्रथा के खिलाफ जागरूक किया।

गांवों में नाइट कैंप का आयोजन

महिलाओं के बीच ये मुहिम रंग लाने लगी। इस मुहिम के तहत गांवों में नाइट कैंप का आयोजन किया जाता हैं। इस दौरान वो गांव की महिलाओं को घूंघट के खिलाफ शपथ दिलाई जाती हैं कि वो अब घूंघट नहीं करेंगीं और अपनी

लड़कियों को पढ़ाएगीं। साथ ही लड़कियों को घर से बाहर निकलने की आजादी देंगी। आज नजमा, अंजू, मंजू आदि जैसी बहुत सी महिलाएं हर नाइट कैंप में एक साथ मिल कर जाते हैं। जहां पर ये लोग दूसरों के सामने अपनी बात रखते हैं। ताकि दूसरी महिलाएं घूंघट हटाने के लिए प्रेरित हों।

बेटी पढ़ाने पर जोर

नाइट कैंप में ना सिर्फ घूंघट हटाने के खिलाफ बल्कि महिलाओं की और दूसरी समस्याओं से जुड़े मुद्दे भी उठाये जाते हैं। नाइट कैंप के दौरान गांव की महिलाओं को अपनी लड़कियों को पढ़ाने के लिए प्रेरित किया जाता है। जिसके बाद जिले की कई लड़कियों ने दोबारा स्कूल जाना शुरू कर दिया है। ये वो लड़कियां थी जिन्होने 7वीं और 8वीं पास करने के बाद स्कूल जाना बंद कर दिया था, क्योंकि इनके माता-पिता का मानना था कि अगर ये स्कूल जायेंगी तो बिगड़ जायेंगी। तब नजमा ने उनको समझाया कि जिन लड़कियों को बिगड़ना होता है वो कहीं भी बिगड़ सकती हैं। इसलिए लड़कियों को स्कूल भेजकर शिक्षित करना चाहिए। इससे परिवार और देश दोनों का ही भला होगा। उनकी इन कोशिशों से कुछ लड़कियों ने अपनी हायर एजुकेशन के लिए ओपेन स्कूल से फार्म भरे हैं। नजमा कहती हैं कि मेरा और मेरे परिवार का मानना है कि अगर लड़कियां घूंघट करके खेतों का काम कर सकती हैं, तो वो पढ़ाई क्यों नहीं कर सकती। इसलिए हमारा मानना है कि लड़कियों को घर की चार दीवारी से बाहर निकालकर उनको स्कूल भेजना चाहिए।

वोकेशनल ट्रेनिंग की योजना

नाइट कैंपों के जरिये उस क्षेत्र के लोगों को कई ऐसे कामों की भी जानकारी दी जाती है जो वो घर बैठे कर सकते हैं। जैसे बिजली-पानी का नया कनेक्शन, ड्राइविंग लाइंसेंस, राशन कार्ड और निवास प्रमाण आदि शामिल हैं। जिनके लिए अब तक लोगों को कई महीनों तक विभागों के चक्कर लगाने पड़ते थे, लेकिन अब यही काम उनके अपने गांव में ही हो जाते हैं। नजमा ने गत वर्ष 28 अक्टूबर को अपने गांव में एक सिलाई सेंटर खोला है। जल्द ही उनकी योजना कंप्यूटर और ब्यूटीशियन जैसी दूसरी वोकेशनल ट्रेनिंग देने की है।

लड़कियों को आत्मनिर्भर बनाना

सरपंच नजमा खान का मकसद लड़कियों को आत्मनिर्भर बनाना है। भविष्य की योजनाओं के बारे में नजमा का कहना है कि वो उन महिलाओं के लिए काम करना चाहती हैं जो खुद का रोजगार शुरू करने की इच्छुक हों। इसके लिए वो डेयरी या दूसरी तरह के छोटे-बड़े रोजगार खोलकर उनको आत्मनिर्भर बनाना चाहती हैं। नजमा का मानना है कि इनमें ज्यादातर वो महिलाएं होंगी, जिनके पति के पास कुछ भी रोजगार नहीं है। इसके लिये उनको तलाश है ऐसे लोगों की जो उनके इस काम में मदद कर सकें।

मन की भावनाओं से सम्मान

सरपंच मैडम ने हम महिलाओं को बताया कि बड़ों-बुजुर्गों का सम्मान घूंघट से नहीं मन की भावनाओं से किया जाता है। ये कहना है हरियाणा के फरीदाबाद जिले के धौज गांव में रहने वाली रेखा का। बरसों तक रेखा की जिंदगी में घूंघट के पीछे तक सिमटी थी, लेकिन घूंघट के खिलाफ एक मुहिम ने उसके जीने का नजरिया ही बदल दिया। आज रेखा के अंदर बदलाव आ गया है। वो आत्मविश्वास के साथ बिना घूंघट लोगों से बात करती हैं। बावजूद नाते रिश्तेदारों को उतना ही सम्मान देती हैं जितना वो कल तक देती थी। ये सब हुआ घूंघट के खिलाफ चलाई जा रही सरपंच नजमा खान की मुहिम से।

घूंघट का किया विरोध मिला था राष्ट्रपति सम्मान

- 'मूसल ब्रिगेड' बनाई थी चुनाव के दौरान
- साल 2010 में सर्व जातिय सर्व खाप महापंचायत का अध्यक्ष मनोनीत

हरियाणा की पर्दा प्रथा का विरोध ना केवल राज्य के गांवों में बल्कि जिला और शहरी स्तर पर राज्य की शिक्षित महिलाएं भी इस मुहिम को चलाने के लिए कमर कस रही हैं उनके इस प्रयास को ना केवल राज्य स्तर पर सरहाना मिली है बल्कि देश में भी उनका काफी नाम हुआ है।

मोनिका गौतम

हरियाणा की घूंघट प्रथा के विरोध में महिलाओं को तैयार कर एक ब्रिगेड बनाने वाली ऐसी ही एक महिला हैं कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में कार्यरत एसोसिएट प्रोफेसर संतोष दहिया। उन्होने वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव के दौरान मूसल ब्रिगेड बनाकर शराब व पैसे की बंदरबांट करने वालो का इलाज किया

था जिस कारण उन्हे वर्ष 2015 में राष्ट्रपति से सम्मान से नवाजा गया है। संतोष दहिया देश की 100 वुमेन एचीवर्स में से एक हैं।

क्यों आई चर्चा में

संतोष दहिया हरियाणा में वर्ष 2014 के दौरान हुए विधानसभा चुनाव के वक्त मूसल ब्रिगेड बनाने के कारण चर्चाओं में आई थी। उनकी इस ब्रिगेड में करीब 300 महिलाएं शामिल हुई थी। इस ब्रिगेड ने पूरे राज्य में तंत्र खड़ा किया था और इनके निशाने पर शराब और पैसे के वे पुजारी थे जो इसके लिए अपना बेशकीमती वोट बेच देते थे। उल्लेखनीय है कि मूसल दरअसल मसालों को कूटने के काम आता है लेकिन, दहिया के नेतृत्व में महिलाओं ने ऐसे शराबियों और पैसे के लालचियों को ढूंढने का काम किया और उनका इलाज तक करने का इंतजाम कर लिया था। संतोष दहिया ने अपने अभियान के दौरान ऐसे लोगों को साफ आगाह किया था कि अगर शराब और पैसे के लिए वोट बेचा गया तो उनकी खैर नहीं होगी।

घूंघट हटाने का अभियान

संतोष दहिया ने हरियाणा जैसे प्रदेश में महिलाओं को घूंघट से बाहर लाकर नई दुनिया दिखाने का भी अभियान चलाया था। इस अभियान का ठेट हरियाणा में विरोध तक हुआ था। दहिया ने कुरुक्षेत्र के पिपली में कई महिलाओं को घूंघट से बाहर भी निकाल लिया था।

हरियाणा की आईपीएस अधिकारी भारती अरोड़ा, हॉकी प्लेयर ममता खरब, बॉक्सर पिंकी जांगड़ा, एमडीयू की प्रोफेसर रेणु चुघ, सामाजिक कार्यकर्ता मोनिका शर्मा, हरियाणा से वे महिलाएं हैं जिन्हें देश की 100 वुमेन एचीवर्स की श्रेणी में शामिल किया गया है और राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किया गया। इन वुमेन एचीवर्स का चयन केंद्रीय मंत्रालय तथा फेसबुक के संयुक्त योजना के तहत साल 2015 के लिए किया गया था।

सर्वखाप महापंचायत की पहली अध्यक्ष

संतोष दहिया को साल 2010 में सर्व जातिय सर्व खाप महापंचायत का अध्यक्ष मनोनीत किया गया था। हरियाणा जैसे प्रदेश में एक महिला को यह मुकाम मिलना अपने आप में बड़ी घटना रही। संतोष दहिया ऑनर किलिंग के खिलाफ भी जोरदार तरीके से खड़ी रही हैं और इस कारण उन्हें केंद्रीय महिला व बाल विकास मंत्रालय की तरफ से वुमेन इन पब्लिक लाइफ कैटेगरी में शामिल किया जा चुका है।

'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' का हस्ताक्षर अभियान

47 वर्षीया संतोष दहिया कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। उन्होंने तीन साल पहले बेटियों को बचाने के लिए हिसार जिले के मुजादपुर गांव को गोद लिया था। उन्होंने इस इलाके को इस लिए अपनाया क्योंकि यहां लिंगानुपात केवल 273 था। संतोष दहिया 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' के लिए हस्ताक्षर अभियान तक चला चुकी हैं। इसका मैमोरेंडम राष्ट्रपति को भी भेजा गया था।

'घूंघट प्रथा' में लाया बदलाव

युवा सरपंच दुर्गा देवी ने किया कार्य

बड़ों की इज्जत करना हमें शुरू से ही परिवार में सिखाया जाता है। बड़ों-बुजुर्गों के प्रति सम्मान हमारी आंखों में झलकता है। मात्र घूंघट लेकर हम इस बात का दिखावा नहीं कर सकते। यह कहना गुरुग्राम के भौडसी गांव की सरपंच दुर्गा देवी का है। दुर्गा देवी बड़े गर्व से कहती है कि उनके गांव की कोई महिलाएं घूंघट नहीं लेती और साथ ही लड़कियों की शिक्षा पर विशेष जोर देती हैं।

संगीता शर्मा

हम समाज में बदलाव लाना चाहते है तो पहले अपने परिवार में बदलाव लाना होगा। परिवार में यदि महिलाओं के प्रति सम्मान है तो अवश्य ही वह समाज में महिला सशक्तिकरण की दिशा में अच्छा कार्य कर सकेगी। गुरुग्राम के भौडसी गांव की सरपंच दुर्गा देवी उन महिलाओं में से है जिनके परिवार में महिलाओं को घूंघट लेने के लिए मजबूर नहीं किया जाता और महिलाओं को चुनाव में खड़ा होना अच्छा समझा जाता है। दुर्गा देवी की सास

स्वयं भी दो बार पंच नियुक्त हो चुकी है। दुर्गा देवी के गांव को राष्ट्रपति ने गोद लिया है और इस गांव को स्मार्ट विलेज बनाया जा रहा है। हाल ही में दुर्गा देवी राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति से मिलकर भी आई हैं।

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना

दुर्गा देवी ने बताया कि उनके गांव की अबादी लगभग 13,000-14,000 है और अधिकतर लोग ठाकुर परिवार से संबंध रखते हैं। उन्होंने बताया कि आरक्षित सीट से चुनाव लड़ा था और सफलता हासिल की। दुर्गा ने बताया कि वह गांव को स्मार्ट विलेज बनाने के लिए विशेष प्रयास कर रही है, ताकि लोगों को गांव में अच्छी सुविधाएं मिल जाएगी। इसके अतिरिक्त गांव में महिलाओं के लिए रोजगार के लिए विशेष प्रबंध कर रही है और वह सिलाई केंद्रों व ब्यूटी पार्लरों के माध्यम से लड़कियों व महिलाओं को प्रशिक्षित करवाती हैं ताकि वह आत्मनिर्भर बन सके। इसके अतिरिक्त गांव की आंगनवाड़ी केंद्रों में जाकर लड़कियों के जन्मदिन मनवाती और कुआं पूजन भी करवाती है जिससे बेटियों को बोझ के रूप में नहीं, बल्कि सम्मान की दृष्टि से देखा जाए।

महिला सशक्तिकरण के कार्यक्रम

दुर्गा देवी ने बताया कि गांव में 'सबला' कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है जिसमें महिलाओं को नई तकनीक सिखाई जाती है और महिला सशक्तिकरण के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। महिलाओं को उनके अधिकारों व कर्त्तव्यों के प्रति भी जागरूक किया जाता है। राज्य सरकार द्वारा महिलाओं के हित में चलाई जा रही योजनाओं के बारे में बताया जाता है ताकि वे अधिक से अधिक फायदा उठा सकें।

गंगोत्री ग्लेशियर की नई चोटी को खोज कर दिया 'मां' व 'बेटी' नाम

राष्ट्रपति ने सुनीता को नवाजा 'नारी शक्ति अवार्ड' से

'पढ़ेगी बेटी तो बढ़ेगा समाज'। बेटी का शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है। समाज में आज भी बाल विवाह व मलिन बस्ती के बच्चों की स्कूल से दूरी की समस्या बनी हुई है। इस समस्या को जड़ से खत्म करने का प्रयास हरियाणा सरकार विशेष रूप से कर रही है। परंतु इसके साथ ही यह जिम्मा हरियाणा के रेवाड़ी की गुर्जर परिवार से संबंध रखने वाली पर्वतारोही व समाजसेवी सुनीता चौकन भी बखूबी निभा रही है। इतना ही नहीं, उन्होंने अपने साथियों के साथ हाल ही में गंगोत्री ग्लेशियर के रक्तवन क्षेत्र में दो चोटियों पर आरोहण किया है। इन चोटियों पर पहली बार चढ़ाई होने पर सुनीता ने एक चोटी को 'मां' व दूसरी को 'बेटी' का नाम दिया है। चौकन को मार्च 2017 में राष्ट्रपति द्वारा 'नारी शक्ति अवार्ड' से सम्मानित किया जा चुका है।

संगीता शर्मा

बेटा व बेटी एक समान होते हैं। बेटी को भी यदि उच्च शिक्षा व अच्छी परवरिश दी जाए तो वह भी अपने परिवार का नाम रोशन कर सकती है। रेवाड़ी की पर्वतारोही सुनीता चौकन ने यह साबित कर दिखाया है। सुनीता चौकन ने वर्ष 2011 में माउंट एवरेस्ट पर फतेह किया था और अब हाल ही में उन्होंने हिमालय की दो चोटियों को खोजा और इस पर आरोहण कर चोटी को 'मां' और 'बेटी' का नाम दिया है। सुनीता की छोटी बहन रेखा चौकन भी 2015 में अफ्रीका कीचोटी किलिमंजारो पर फतेह कर चुकी है।

बेटियों ने किया नाम रोशन

सुनीता के पिता सेवानिवृत सूबेदार जौहरी

सिंह भी खुश है कि उनकी दो बेटियां हैं और दोनों ने ही अपने कार्यों से बेटों से भी बेहतर अपनी पहचान बनाई है। वह कहते है कि राष्ट्रपति के हाथों सम्मानित होने से सुनीता ने अपने सपनों को पूरा करने के साथ-साथ माता-पिता का गौरव भी बढ़ाया है। सुनीता बताती है कि वह गुर्जर समाज से संबंध रखती है और उस समाज में लड़कियों की शिक्षा पर जोर नहीं दिया जाता और उनकी शादी भी कम उम्र में कर दी जाती है। इसलिए इस समस्या को हल करने के लिए वह संस्थाओं, स्कूलों व कॉलेजों के कार्यक्रमों में लैक्चर देने जाती हैं। जहां जरूरत पड़ती है वहां स्वयं जाकर लोगों को जागरूक करती है। बाल विवाह के बारे में पता चलने पर वह उनके परिवार के सदस्यों से मिलती है और बाल विवाह रूकवाने का प्रयास करती है। वह कहती है कि मलिन बस्ती के बच्चों को स्कूल तक पहुंचा कर दाखिला करवाती है और उसका प्रयास रहता है कि ये बच्चे बड़े होकर अच्छे इंसान बनें व अच्छी नौकरी प्राप्त करें।

चोटी का रखा 'मां' और 'बेटी' नाम

सुनीता ने बताया कि बचपन से ही उसे पर्वतारोहण व समाज सेवा का शौक था और इसको वह अपने जीवन में अपना रही है। सुनीता चौकन ने बताया कि 2012 में गंगोत्री हिमालय की इन चोटियों की रेकी की और एक नई चोटी को फतेह करके उसका 'बेटी' नाम रखने की सोची थी। उसने व उसके साथियों ने अब इन चोटियों के आरोहण का बीड़ा उठाया। 20 मई 2017 को वह अपने पांच साथियों के साथ गंगोत्री से गोमुख के लिए चली थीं। गोमुख के बाईं ओर रक्तवन से होते हुए वे सुदर्शन पर्वत के निकट स्थित ग्लेशियर में पहुंचे। सुदर्शन पर्वत की दाईं ओर की घाटी में आगे बढ़ते हुए एक कैंप के बाद उन्हें पांच चोटियों की शृंखला नजर आई। 4 जून को कुछ अंतराल के बाद इनमें दोनों दुर्गम चोटियों का आरोहण कर लिया गया। उनका मिशन 16 जून को समाप्त हुआ। सुनीता ने बताया कि चढ़ाई के दौरान एक चोटी का नाम 'मां' (6009 मीटर) और दूसरी चोटी का नाम 'बेटी' (6020 मीटर) रखा। वह कहती है कि आने वाले समय में वह बाकी तीनों चोटियों का भी आरोहण करेगी।

राज्य ब्रांड अंबेसडर नियुक्त

सुनीता ने बताया कि उनकी 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ एकता समिति' राज्य के अलग-अलग जिलों में टीम बना रही है। इस टीम की सदस्या बेटी बचाने और उसे पढ़ाने के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित करती हैं। सुनीता की झोली में ढेरों अवार्ड व पुरस्कार हैं। दस साल से पर्वतारोहण से जुड़ी सुनीता तीन राष्ट्रीय पुरस्कार, बीएसएफ डॉटर अवार्ड, भारत गौरव अवार्ड, नारी शक्ति, हरियाणा हीरो अवार्ड व अन्य कई अवार्ड से सम्मानित हो चुकी हैं।

फुटबॉल का सिरमौर बना भिवानी का अलखपुरा

फुटबॉल की क्रांति फैल रही आस-पास के गांव

दो हजार वोटरों को समेटने वाला गांव अलखपुरा आज फुटबाल में सिरमौर बन रहा है। फुटबाल खेलने वाली ज्यादातर लड़कियां गरीब परिवार से भले ही हो लेकिन सब में फुटबाल का जज्बा देखने लायक है। यही कारण है कि आस-पास के गांवों में अलखपुरा की फुटबाल क्रांति पहुंच चुकी है व स्थिति यह है कि कई गांवों के अंदर लड़कियां व लड़के फुटबॉल को अपना करियर बना कर अभ्यास कर रहे हैं।

अलखपुरा की फुटबाल टीम की खिलाड़ी बालिकाएं

सुरेन्द्र सिंह मलिक

प्रदेश को विकास की दिशा देने वाला भिवानी जिला मुक्केबाजी में जहां देश-दुनिया में प्रदेश की अमीट पहचान बना चुका है वहीं जिले के गांव अलखपुरा की लड़कियां भी फुटबॉल में कीर्तिमान स्थापित कर रही है। ग्रामीणों ने फुटबॉल को बढ़ावा देने के लिए 50 लाख रुपए की लागत से खेल स्टेडियम का निर्माण किया हुआ है जहां वर्तमान में 200 लड़कियां फुटबाल में नई इबारत लिख रही है। हालांकि यह गांव दस वर्ष पूर्व कपास की खेती करने वाले गांव के रूप में जाना जाता था लेकिन अब धीरे-धीरे अलखपुरा की पहचान लड़कियों के खेल के गांव के रूप में हो रही है।

राज्य सरकार ने फुटबाल को बढ़ावा देने के लिए खेल अकादमी स्थापित की है। वर्तमान में जिला भिवानी का यह दो हजार वोटो वाला गांव फुटबॉल का सिरमौर बन रहा है।

गांव में फुटबाल खेल की शुरूआत

अलखपुरा के लोग उस वक्त को याद करते हुए कहते हैं कि एक वक्त था जब हम टीवी पर खेल देखते थे तो सोचते थे कि क्या कभी वो समय भी आएगा कि जब गांव के खिलाड़ी टीवी पर दिखाई पड़ेंगे। लेकिन उन्हें शायद पता नहीं था की वो समय उनके नजदीक था। वर्ष दो हजार छह में गांव में गोर्वधन दास पीटीआई का आगमन हुआ व उन्होंने गांव के बच्चों की रुचि अनुसार प्रशिक्षण देना प्रारंभ किया जिसमें लड़कों ने राज्य स्तर पर बहतरीन प्रदर्शन किया।

ग्राउंड में लड़कियों का आगमन

गोर्वधन दास पीटीआई ने बताया कि एक दिन जब वे ग्राऊंड में बच्चों को प्रशिक्षण दे रहे थे तो गांव की लड़कियां खेलने के लिए ग्राऊंड में पहुंची। उन्होंने उन्हें एक फुटबाल दी व खेलने को कहा। गोवर्धन के अनुसार उस वर्ष गांव की लड़कियों ने प्रतिस्पर्धा में हिस्सा लिया व दूसरा स्थान प्राप्त किया। उसके बाद वर्ष 2009 में लड़कियों ने फिर जीत दर्ज की। बस यहीं से शुरू होती है अलखपुरा की कामयाबी की दास्तां।

ज्यादातर खिलाड़ी स्कूल में पढ़ते

फुटबॉल को अपना करियर बना कर खेलने वाली ज्यादातर लड़कियां गरीब परिवारों की हैं। इनमें ज्यादातर स्कूल में पढ़ती हैं व कुछ ऐसी है जो कालेज में पढ़ रही हैं। फुटबाल में बेहतरीन प्रदशर्न करने वाले इस गांव में वर्तमान में दो ग्राऊंड हैं जहां एक में लड़के व दूसरे में लड़कियां सवेरे सांय फुटबाल का प्रशिक्षण लेते हैं। गांव में 25 के करीब लड़कियां फुटबाल की बदौलत सरकार से स्कॉलरशिप ले रही हैं।

खेल की बदौलत रोज़गार

अलखपुरा में एक दर्जन के करीब लड़कियां ऐसी है जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेल को नई पहचान दी है। गांव की आधा दजर्न से ज्यादा लड़कियां खेल की बदौलत रेलवे ,एसएसबी व सीआरपीएफ में नौकरियां प्राप्त कर चुकी हैं व कुछ लड़कियां ऐसी है जो इंडिया कैंप में प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं।

क्या कहती फटबाल कोच

फुटबॉल कोच सोनिका बिजानियां ने बताया कि गांव में सरकार की और से खेल अकादमी बनाई गई है जहां वे पिछले तीन वर्ष से फुटबाल में लड़कियां का प्रशिक्षण प्रदान कर रही हैं। उनका कहना हैं कि अलखपुरा में फुटबाल का बढ़ता करेज महिला सशक्तिकरण को जहां बढ़ावा दे रहा है वहीं फुटबाल में लड़कियों द्वारा किया जा रहा बेहतरीन प्रदर्शन देश-दुनिया में हरियाणा की खेलों में मजबुत पहचान बना रहा है।

बिना हिम्मत व हौसले के कोई भी कार्य संभव नहीं

यूपीएससी के परिणामों में दिखाई दिया प्रतिभाओं का बेहतर प्रदर्शन

लक्ष्य तय करो और बार-बार उसे पानी की कोशिश करते रहो। चूंकि हिम्मत करने वालों की कभी हार नहीं होती है। यह मानना हैं यूपीएससी में अव्वल आने वाली ज्यादातर महिलाओं का। उनका मानना है बिना हिम्मत कोई भी कार्य संभव नही है।

यूपीएससी में 637 वां रैंक प्राप्त करने वाली देविका

सुरेन्द्र सिंह मलिक

हाल ही में यूपीएससी के परिणाम घोषित हुए जिनमें महिलाओं ने अच्छे अंक लेकर बेहतर प्रदर्शन किया व बाजी मार कर साबित कर दिया की वे पुरूषों के मुकाबले किसी भी क्षेत्र में कम नहीं हैं। इन महिलाओं में देश सेवा का जोश व कार्य करने की हिम्मत साफ दिखाई दी। ज्यादातर से जब मंजिल तक पहुंचने के बारे में पुछा गया तो उनका जवाब था कि बिना संघर्ष के मंजिल तक पहुंचना असंभव है। यूपीएससी में 637 वां रैंक प्राप्त करने वाली देविका कहती है कि वैसे तो देश में काफी सेक्टर हैं, जहां काम करने की जरूरत है। लेकिन मेरा मत है कि उन गरीब और जरूरतमंद बच्चों के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य का इंतजाम हो, जो किसी अभाव की वजह से आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं। ये समाज का अभिन्न अंग हैं और इनके लिए अगर काम कर पाई, तो मेरी लिए सबसे खुशी की बात होगी। उनका कहना हैं कि बेरोजगारी और बढ़ती जनसंख्या देश के लिए बेहद खतरनाक हैं। इस दिशा में काम करने की जरूरत है।

लक्ष्य तय करे और पाएं

सोनीपत जिले के गांव बड़ी की रहने वाली प्रियंका त्यागी जिन्हे यूपीएससी में 467 वां स्थान प्राप्त किया है कहती हैं कि सिस्टम में रहकर वह ज्यादा कारगर तरीके से काम कर सकते हैं। वो कैग में सीनियर ऑडिटर के पद पर चंडीगढ़ में तैनात हैं। उनके पिता गजराज तथा एक प्राइवेट संस्थान में काम करते हैं और मां मुनेश त्यागी गृहणी हैं। प्रियंका कहती हैं कि मेरा सपना गांव

प्रियंका त्यागी जिन्हे यूपीएससी में 467 वां स्थान प्राप्त किया

अनुज मलिक

में 611 रैंक प्राप्त करने वाली दीक्षा कहना है कि एक बेहतर राष्ट्र निर्माण के लिए जरूरी है कि गांव और शहर का फर्क समाप्त किया जाए। दिल्ली यूनिवर्सिटी से बीए करने के बाद लॉ कर रही है। वह कहती हैं कि पिछले कुछ दिनों में समाज और बेटियां दोनों में ही व्यापक बदलाव आया है। यह बेटियों को भी लगने लगा है कि अधिकार मांगने से नहीं, बल्कि पाने से मिलेंगे। इसके लिए वह जी-तोड़ मेहनत करती हैं। दूसरी ओर समाज का नजरिया भी धीरे-धीरे बदल रहा है। इसका एक प्रमाण तो मैं ही हूं, अगर मेरे माता-पिता मुझे सहयोग नहीं करते, तो यह संभव नहीं था । वह कहती हैं कि वैसे तो देश में कई समस्याएं हो सकती हैं, लेकिन मेरी नजर में सबसे बड़ी समस्या है महिलाओं से हो रहा भेदभाव। इनको समानता का अधिकार मिलना ही चाहिए। वे कहती हैं कि समाज में बदलाव लाने के लिए जज्बे व जोश की आवश्यता है । उनका मानना है जिस प्रकार से आज हालात है उसमें हमें धैयपूर्वक कार्य करने व समझ के साथ चलने की आवश्यकता है। उन्होंने युवाओं को हर परिस्थिति में डटे रह कर कार्य को अंजाम देने की बात कही।

की बेटियां को आगे लाने के लिए प्रयास करना है ताकि वे भी मौका पाकर देश सेवा में आ सकें।

वह कहती है कि माता-पिता के सहयोग से आज में इस मुकाम तक पहुंची हूं। वह कहती हैं कि सबसे बड़ी देश की समस्या है आर्थिक असमानता। यहीं से सारे संकट शुरू होते हैं। अगर देश में समानता होगी, तो आधे विवाद खुद ही हल हो जाएंगे।

लक्ष्य को करियर के रूप में अपनाये

बाल भारती स्कूल दिल्ली से प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने वाली और भारतीय विद्या भवन से बीटैक अनुज मलिक कहती हैं कि सफलता का मूल मंत्र है कड़ी मेहनत, वह भी पूरी ईमानदारी के साथ। युवाओं के लिए इतना ही कहूंगी कि जो भी लक्ष्य तय करो, उसे केरियर के रूप में अपनाने तक रूकना नहीं है।

बेटियां के प्रति बदल रहा है समाज का नजरिया

हाल ही में जारी किए यूपीएसई के परिणाम

611 रैंक प्राप्त करने वाली दीक्षा